

**राज**  
कॉमिक्स  
मूल्य 15.00 संख्या 375

# बकौरा का जादू

## नारायण

**मुफ्त**  
नारायण का एक पोस्टर





# काशीराज-आर सिकंदर का जादू

SRI LANKANAGAR-335007

लेखक : करुण कुमार वाही  
चित्रांकन : प्रताप सुकीक  
सम्पादन : मनीष चन्द्र गुप्त

मगधवा दार्ड हजार वर्ष पूर्व 'मध्य रूस' में फैला था  
जो युद्धसवार 'सीथियन' का आतंक।

एक मान्यता थी कि जो सीथियन जितना अधिक  
युद्धाट व हत्याएं करता उतने बड़े सम्मान का  
अधिकारी बन जाता।

हा हा हा। मेरे पास हैं  
दुश्मनों की सख्से ज्यादा गोपाड़ियां इस  
वर्ष मुझे मिलेगा 'सीथियन हत्यारा'  
सम्मान।

पूरे विश्व में  
बूजेगी सीथियनों की  
हत्यारी तलवारों व स्रोतों के  
आभूषणों की झंकार।

जिनकी क्रूरता की ये हद थी कि किसी सीथियन राजा की मृत्यु पर  
सबके साथ सैकड़ों घोड़े, पचासियों सेक और सेविकाएं गला घोटकर,  
शिलों के बरतनों के साथ मकबरे में दफना दिए जाते थे।

बाद में सीथियनों से भी क्रूर व  
जालिम 'सोरमेटा' कबीले से संघर्ष के कारण  
सीथियन पूरी तरह नष्ट हो गये।



और आज हजारों वर्ष बाद २० वीं सदी में अगर  
सीथियन घुड़सवार 'खजार' \* में दिखाई पड़ें तो  
किसे आश्चर्य नहीं होगा !



खजार वासी, जिन्हें 'खजार' कहा  
जाता है, उस धूल भरी आंधी को  
विस्मय से देख रहे थे -

सैकड़ों घुड़सवारों  
का काफिला लगता  
है ये तो !

हजारों वर्ष पहले  
इसी तरह सीथियन घुड़-  
सवार आते थे मौत की  
आंधी बनकर।

और सुना है,  
वेमद स्वीफनाक  
हत्यारे थे  
सीथियन।



अकल सटिया गार्ड है  
क्या बुद्ध ? सीथियन हजारों  
वर्ष पूर्व ही लुप्त हो  
चुके हैं।

तो फिर ये घुड़सवार  
कौन हैं ? दुश्मन  
या दोस्त ?



खजारों के दिल तेजी के साथ धड़कने लगे थे।

\* खजार रूस के एक स्थान का नाम !



धूल भरी आंखी छटी। सीथियनों को पहचान कर चीख पड़ा कोई -

सीथियन!  
सूजी सीथियन  
हैं ये।

इतिहास से निकल  
कर बाहर आ गए हैं  
सीथियन। उफ!

सीथियन दल का राजा बुल्गार -

भूट लो  
पूरे खजार  
को।

सैकड़ों की संख्या में टिड्डी  
दल की तरह फैल गए  
सीथियन खजार के चपे -  
चपे पर -

पूरे नगर पर कब्जा कर लिया था  
जापिसों ने -

खजारे में दहशत  
मचा दी थी -

सीथियन  
भूटते हैं सिर्फ  
सोना।

नहीं



सोने के अलावा सीधियों की एक  
और प्यास थी। सूज की -



ताजा और गर्म वह  
मदिरा में मिलाकर  
पीते हैं हम।

बुल्गार की 'मस्क' मदिरा व रक्त से छलक उठी -



वाह! अब आयेगा  
मदिरा पान का असली  
मजा।

ऐसा कत्ल-ए-आम सब  
दुनिया के इतिहास में कभी न  
हुआ होगा -

ऐसी लूट कभी न हुई होगी -

सारा सोना व  
घर सुहर बरूदा दो।

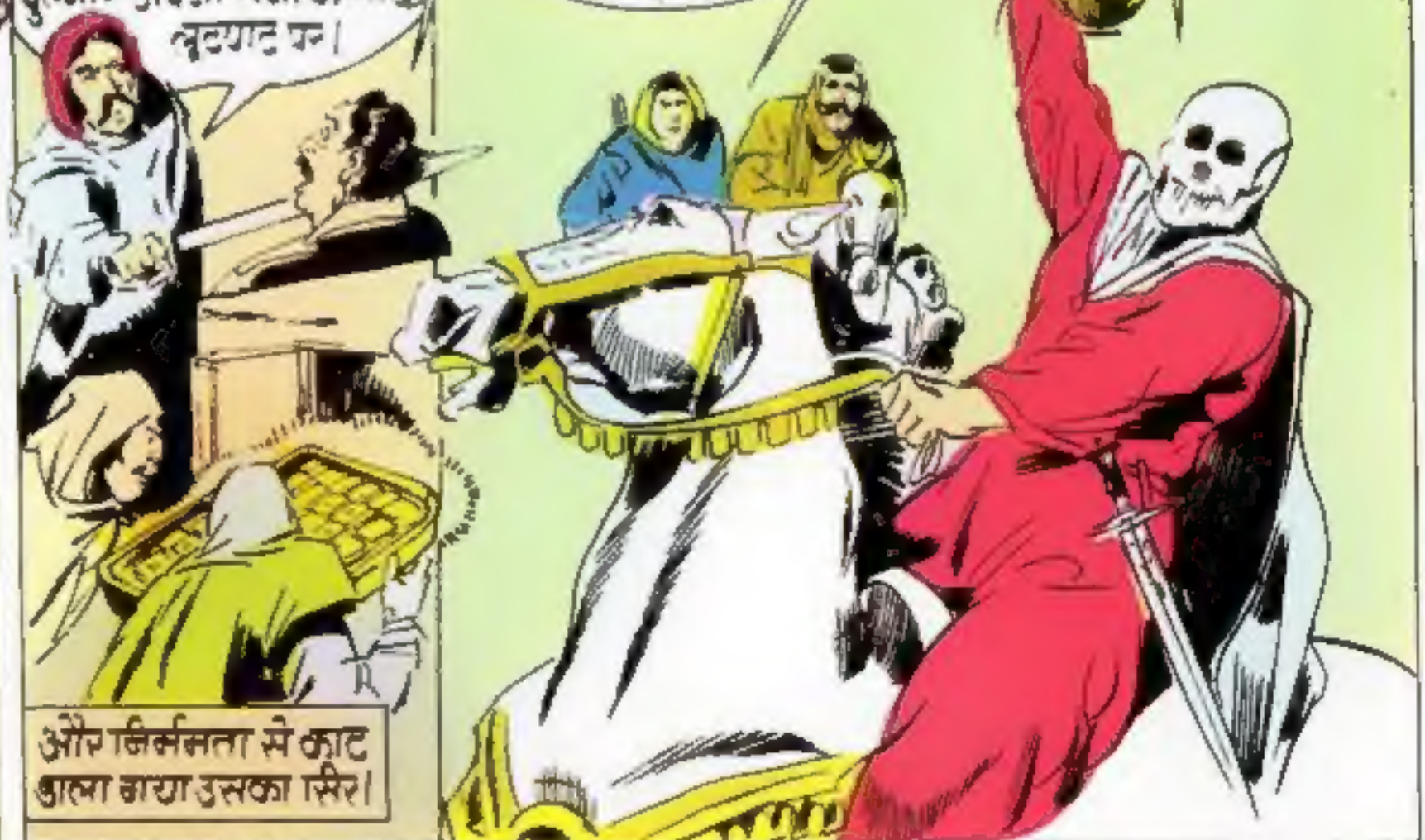
पांच हजार की आबादी थी खजारों की  
और छः हजार की संख्या थी  
सीधियों की।

रूस में सोना  
सिर्फ बुल्गार के पास ही  
मिलेगा। हा हा हा। पूरे  
खजार की कंगालिस्तान  
बना दो।

इस बार  
मुझे हासिल करना  
है 'सीधियन किलर-  
एवार्ड'!

नहीं। सोने के साथ मुझे  
चाहिये तेरा सिर भी, क्योंकि  
जिसमें होते हैं सबसे ज्यादा  
सिर उसी सीधियन का  
सरदार बनाकर भेजना है।  
बुल्गार अपनी मंजा के साथ  
लूटगाद पर।

हा हा हा। अब  
हम सबने जो सिर काटे हैं उनकी  
गिलती होगी और विजेता ही  
बनगा अगली लूट का  
मन्दार।



और जिर्मता से काट  
डाला गया उसका सिर।



गिनती हुई और विजेता बना अवाली लुट का सरदार,  
एक के बाद एक नगरों व कस्बों को लूटता चला गया  
सीधियों का वह काफिला।



कावून के रक्षक इस फौज के आगे बुरी तरह असफल हुए -



रूसी जासूसी एजेंसी के 'जी. बी.  
यानि कोमिलेत गोस्वरस्तवेनोई  
बेजोपास्तनोस्ती यानि सोवियत राज्य  
सुरक्षा समिति, के चीफ आंद्रीपोव -

आज तक पता नहीं चल पाया  
कि हजारों सालों तक लुप्त प्रायः रहने  
के बाद स्वर्गी सीधियन एकाएक फिर  
कहां से पैदा हो गये?

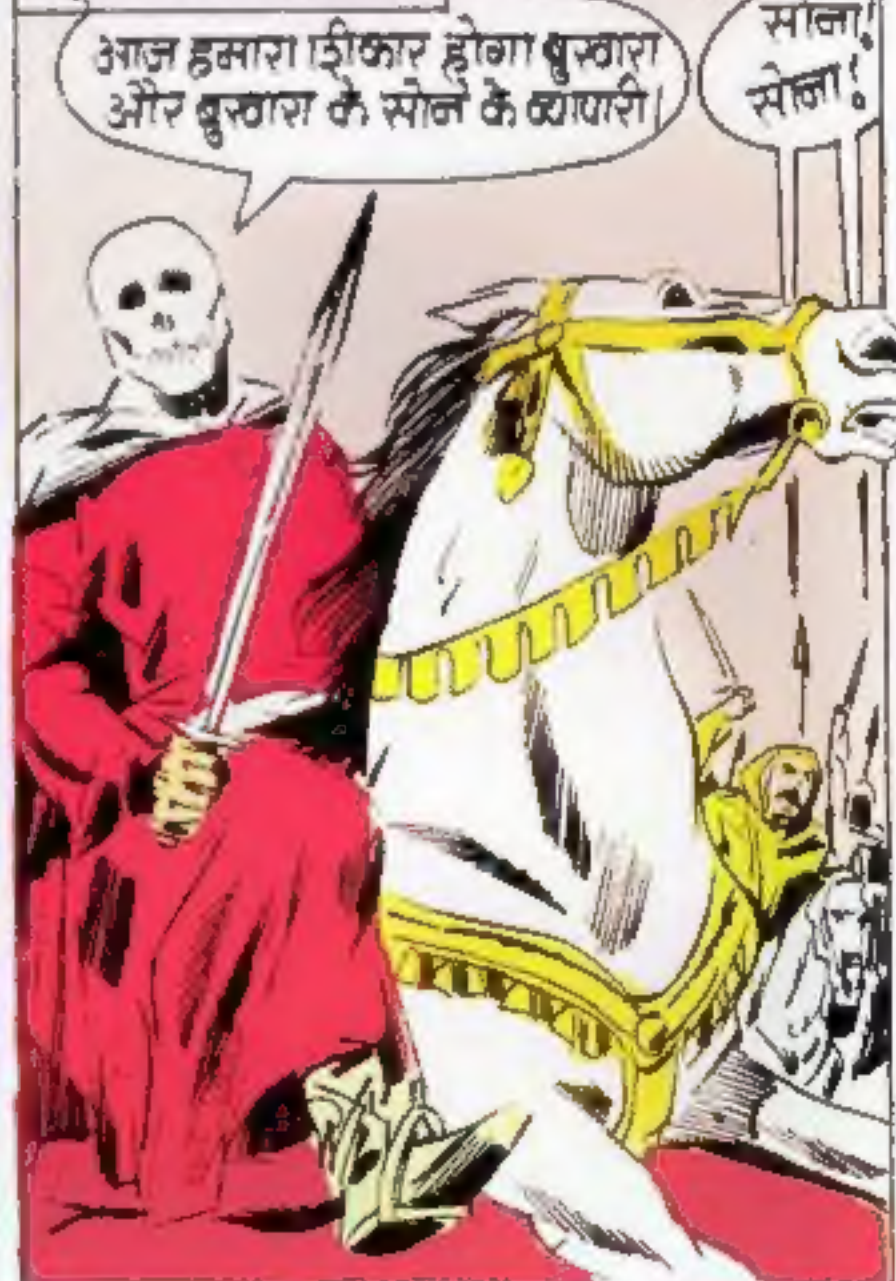


आंद्रीपोव के सामने बैठी थी के. जी. बी.  
की जहीन जासूस सूजन -



सूजन निकल पड़ी सिधियों की तलाश में।

इधर सीधियन घुड़सवारों की फौज निकल पड़ी  
थी अपनी अवाली लुट के लिए। बुलवार की आंखों से  
लहू सा टपक रहा था -





दुस्वारा में प्रवेश किया सीधियों ने।

सीधियों घुड़सवारों की फौज आ गई। भागो भागो।



पूरे नगर को चारों ओर से घेरने के बाद आरम्भ हुई एक महालतम लूट!

ज्वैदार्थ क-आफ़डा

हुआ कत्ले-आम-

सुन और सोना ही भाता है सीधियों को।



लेकिन आज सब कुछ उल्टा आसान नहीं है।

आओ! आओ दरिदो! सूसन सुजा देगी तुम्हारे गन्दे चेहरे।

सूसन! ब्लैक बेल्ट चैंपियन!



आज की दरिदगी महंगी पड़ेगी तुम्हें।



लेकिन सूसन का वह खेल अधिक देर तक नहीं चला -

इसे मैं खुंटे से  
गाढ़ दूंगा दीवार के  
साथ।

आह!  
छोड़ दो मुँहरे!  
शैतानो! आह!



बर्झी!

लेकिन यह क्या! माथा सीथियन  
का ही मुख हो उठा खून से!



चोंक पड़े थे खूनी  
सीथियन वह दृश्य देखकर -



सूसन ने भी निगाहें उठाकर देखा अपने मददगार की ओर -



क्या ये  
जागराज है?  
जिसके जिस्म में  
वास करते हैं  
सैकड़ों साँप।





जागराज !



जवाब में बारूदी तीर आपके जागराज की ओर, लेकिन -

तुम्हारे तीरों का टारगेट बदल जाये तो मुकसल तुम्हारा ही है।



सर्पारस्सी पर झुलते जागराज का कहर भी देखा सीरीयल ने -



जागराज की मौजूदगी में सूझ के त्रिये यह लड़ाई बेहद रोमांचक थी -



पूरे शहर पर कब्जा है इनका। इन पर कब्जा करेंगे मेरे सर्पसैनिक।







ठीक तभी नागराज और सूजन ने देखा एक आश्चर्य!



नागराज के सामने प्रकट हुआ बुल्बारा का मानसिक चित्र।



पहली बार किसी ने सीथियनों की कैदी बनाया और मानसिक शक्ति के प्रहार से मुझे उन सीथियनों को उड़ाना पड़ा।





नागराज ने मानसिक शक्ति से प्रत्युत्तर दिया बुल्गार को -

बुल्गार! अब  
तुम और हंसा नहीं मथा  
सकोगे रूप में। नागराज तुम्हें  
तुम्हारी सीथियन फोर्स सहित  
रक्त करेगा।



बुल्गार की बाकी बची सीथियन सेना धूल भरी  
आंधी उड़ाती गायब हो गयी बुल्गार से -



उत्तर सूसन अभी तक हैरान खड़ी थी -

नागराज!  
यह कैसा कमिज़ा था।  
एकारक बालू की तरह  
कैसे फट पड़े सब कैदी  
सीथियन?

सीथियनों का  
नेता बुल्गार  
मानसिक शक्तियों  
का भी मास्टर  
है।

लेकिन तुम कौन हो?  
तुम्हें बहादुरी के साथ  
सीथियनों से जड़ना देस  
अच्छा लगा मुझे।

नागराज! मेरा नाम सूसन है।  
मेरे पिता बादरखान बुल्गार के  
सबसे बड़े व्यापारी हैं सोने के  
और मैं के. जी. बी. की  
जासूस हैं।

... नागराज!  
अगर तुम ठीक कल  
पर न आ जाते तो  
मेरा बचन  
सुकित था।

अगर मैं तुम्हारे  
किसी काम आ सकू  
तो सुबरे सुबही  
होगी नागराज!

सूसन! मैं सोने के  
सबसे बड़े व्यापारी  
तुम्हारे पिता बादरखान  
से मिलना चाहूंगा।

क्यों नहीं नागराज!  
मैं तुम्हें उनसे अवश्य  
मिलवाऊंगी।



सीथियज बुलवार!

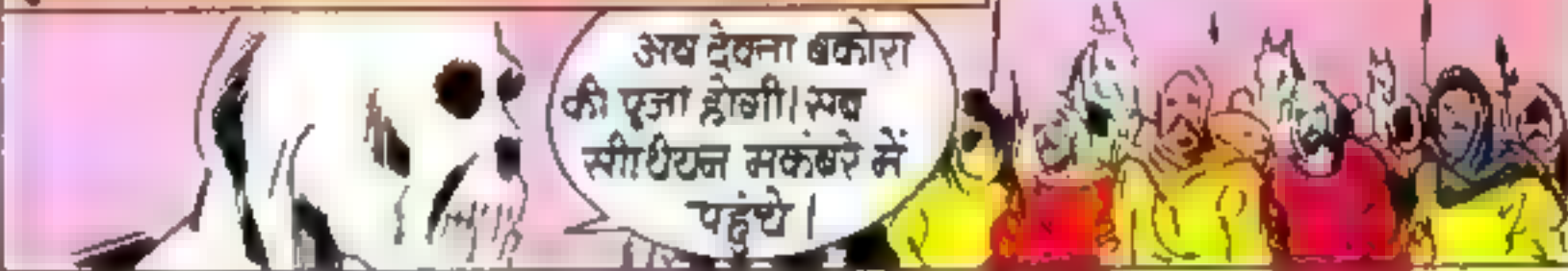
आज की लूट का  
सोला देवता के सजाने में जमा  
कर दो सेनापति बाबुरोब!



सेनापति बाबुरोब उस ज्वालामुखी  
की शक्ति के टीले पर चढ़ गया —

सारा सोला  
सजाने में जमा  
कर दो।

बुलवार की नदी से लाखों आंखों से कहर दूट पड़ रहा था —



अब देवता बकोरा  
की पूजा होगी। सब  
सीथियज मकंठरे में  
पहुंचे।

बुलवार वाला फाड़कर हंसा —



हा हा हा हा हा!  
नागराज! तुम्हारी मौत के बाद  
यहां जड़न होगा।



नागराज को लेकर बादशान के  
सामने उपस्थित हुई सूजन।

नागराज! इनसे मिलो!  
ये हैं मेरे पिता।

मिस्टर  
बादशान!

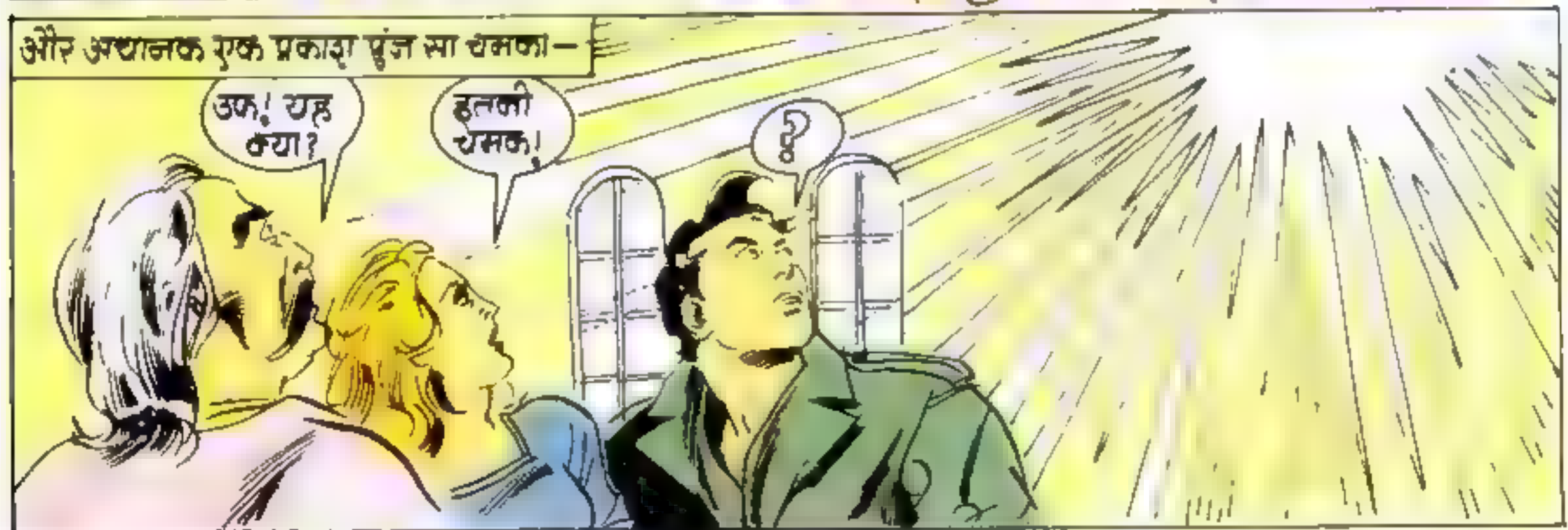


नागराज!

ओह! मुझे सूजन ने  
सब कुछ बताया है नागराज!  
मेरी बेटी की जीवन रक्षा करके  
आज तुम्हने मुझे भी मौत  
से बचा लिया।









आंखें खुली की खुली रह गई तीनों की —



चीख पड़ा बादस्वान —

याकून! बकौरा का जादू! जाना राज! ये बकौरा के जादू का कमाव है। सीधियों पर जब कभी संकट मंडराया, उन्होंने बकौरा की पूजा की और बकौरा ने उन्हें दिया एक शक्तिदूत...  
**याकून!** उस संकट से निबटने के लिए।



लेकिन याकून का यहां क्या काम?

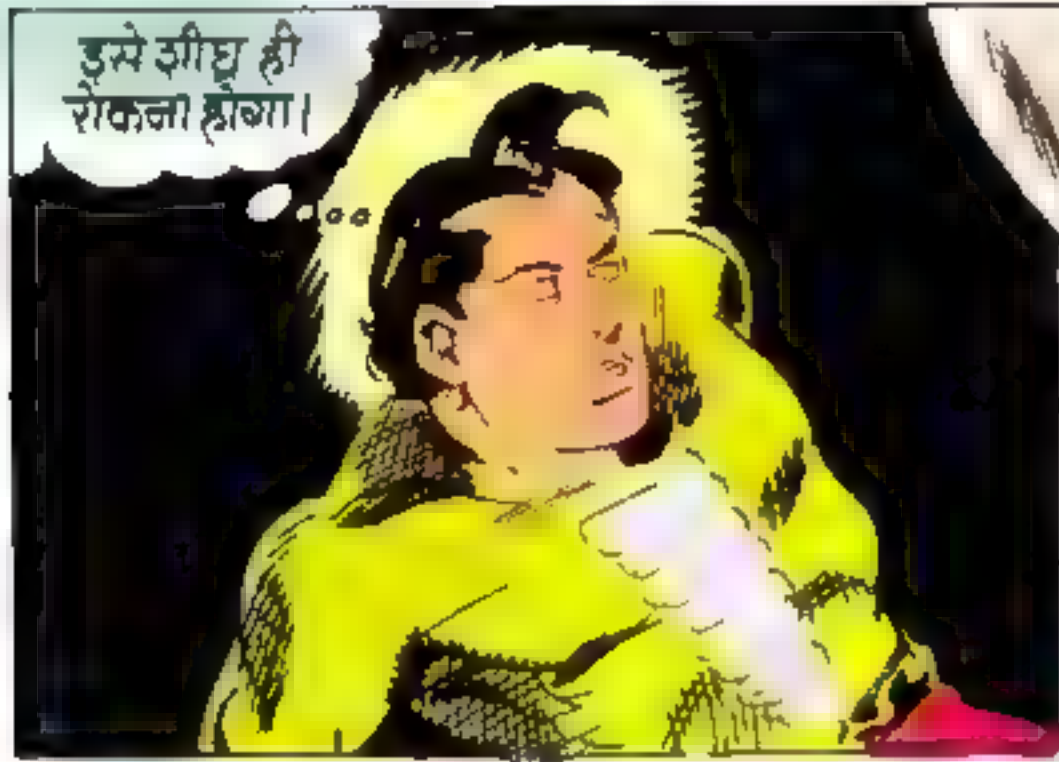
ये मुझे मानने आया है सूखन! जाना राज की।



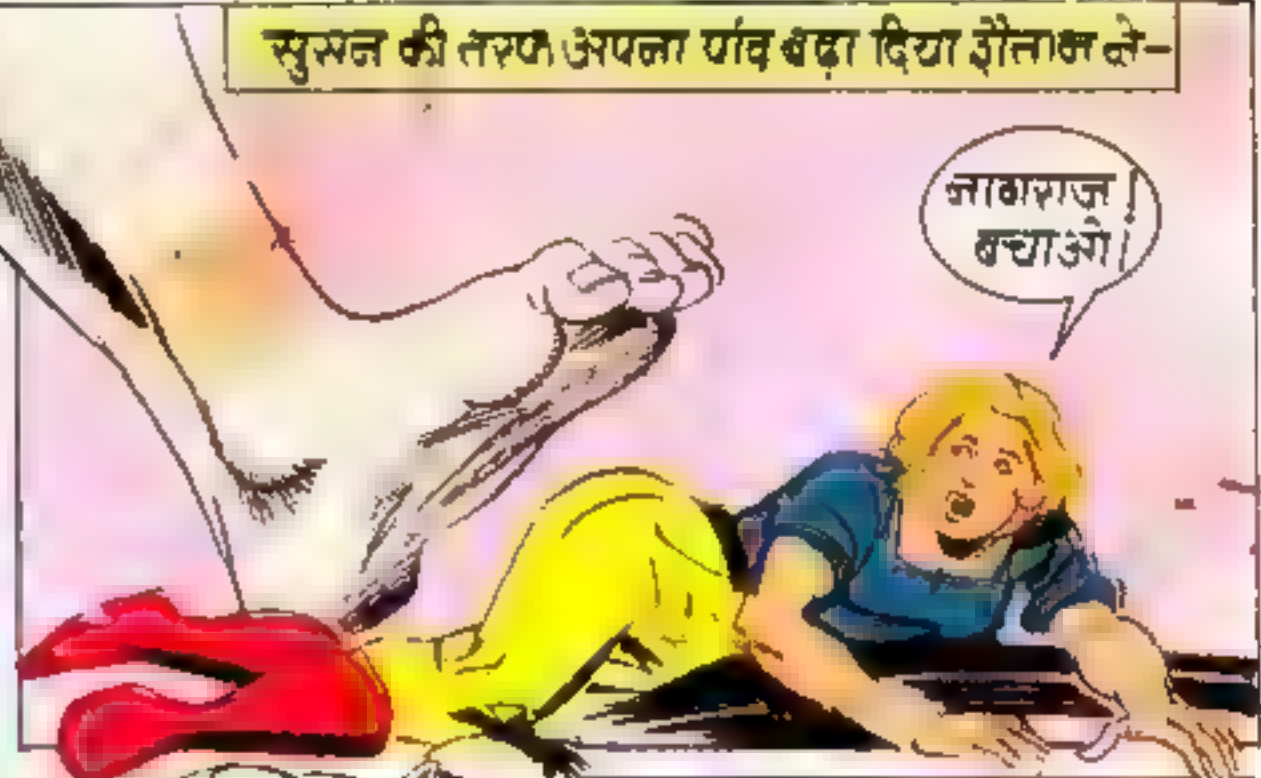
नागाराज न सिर्फ बचा, बल्कि तीव्रगति से आते उस मन  
भर के जोकीयो को भी रोका -





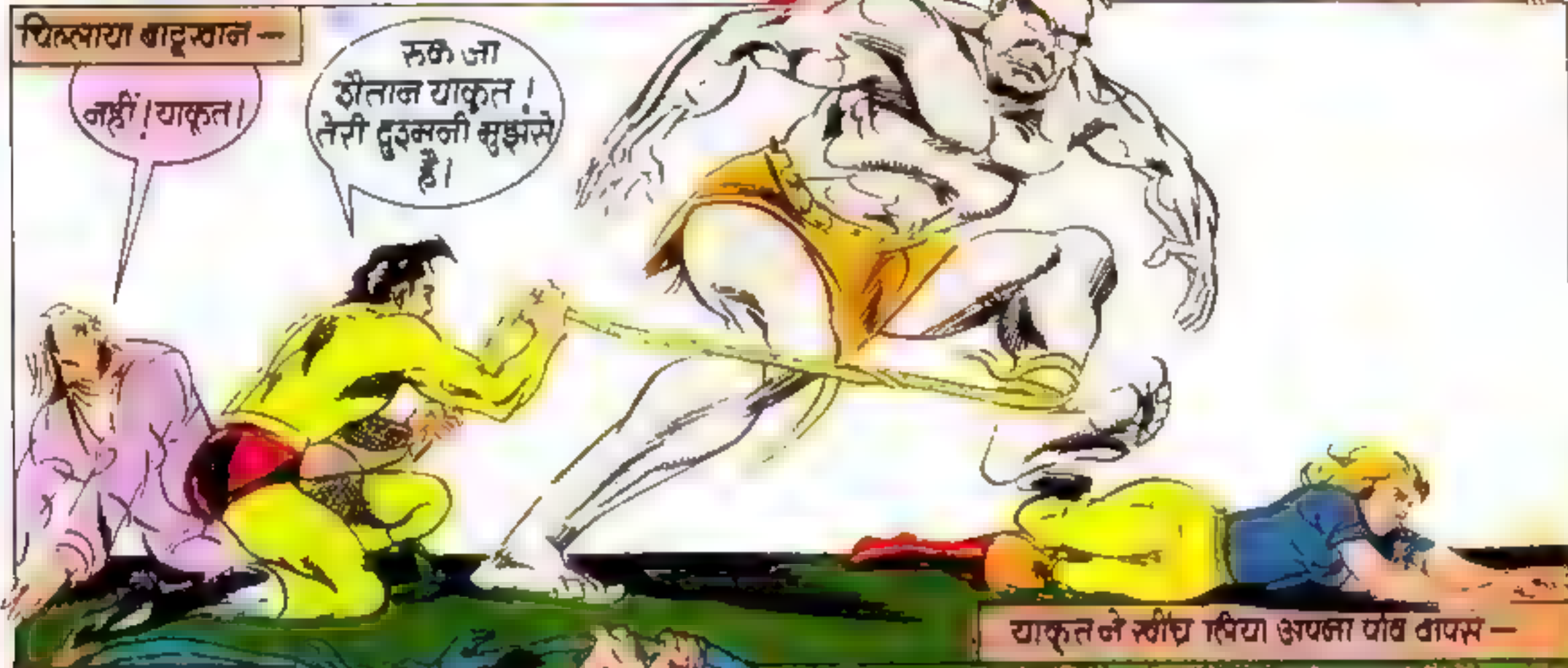


इसे डीछ ही रोकना होगा।



सुसज की तरफ अपना पांव बढ़ा दिया डौताक ले-

जागराज!  
बचाओ!



पिछवाया बादुरान -

नहीं! याकृत!

रुक जा  
डौताक याकृत!  
तेरी दुश्मनी मुझसे  
है।

याकृत ने स्वीछ लिया अपना पांव वापस -

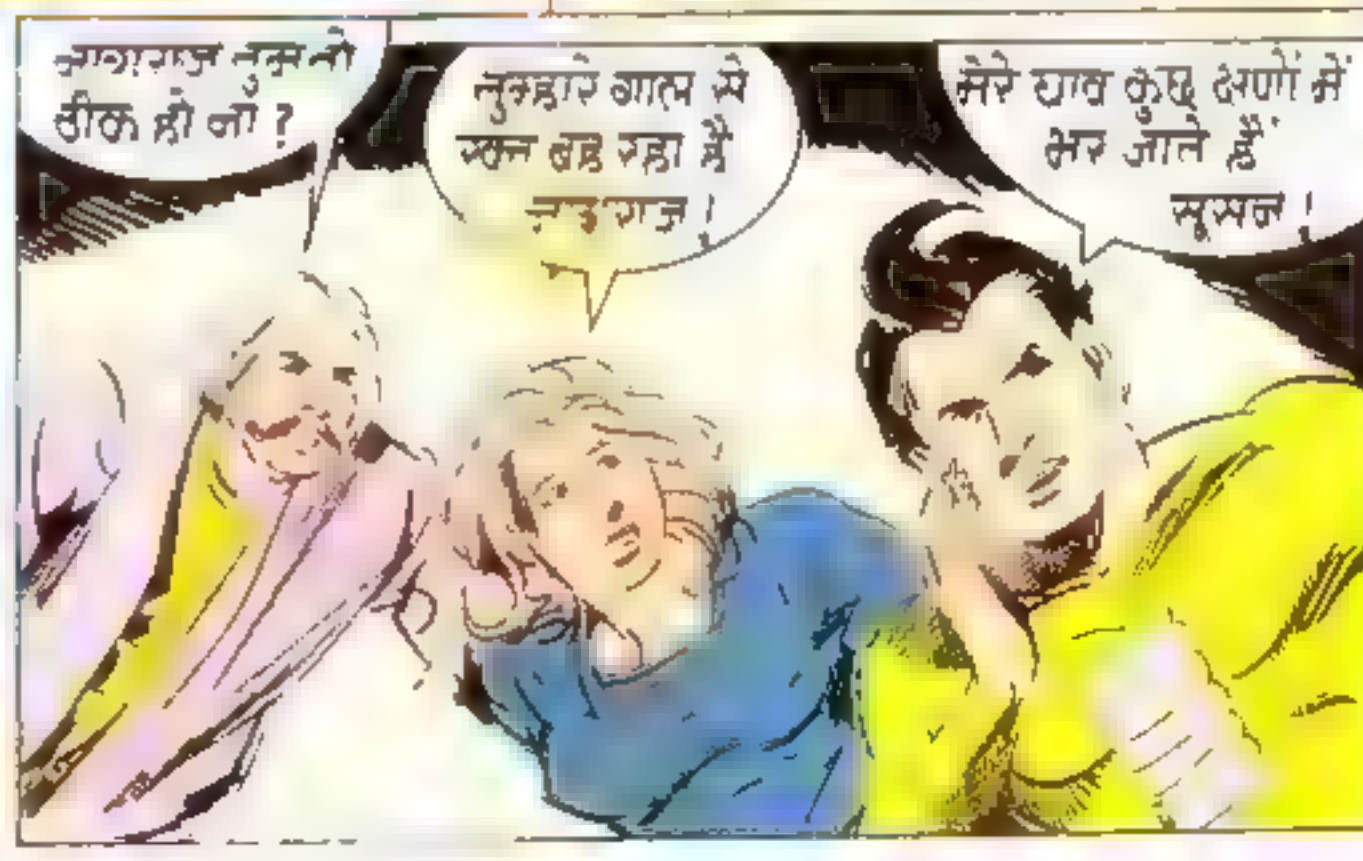


सर्वस्वी पर प्रचण्ड  
वेग के साथ लहराया  
जागराज -

तब न निकल गार्ह सुसज मौत के मुंह से।



याकृत ने हल्की सी टापन जड़ी जागराज की -



जागराज तुम को  
ठीक हो जा ?

तुम्हारे गात्र से  
रक्त बह रहा है  
जागराज!

मेरे पांव कुछ क्षणों में  
भर जाते हैं  
सुसज!





लेकिन अब जो छाव मैं हूँ दंगा, वो इसकी लाश के साथ सड़ेंगे।

जागराज ने पत्थर को भी पिघलाने वाली विष-फुंकार फेंकी -



याकून की फुंकार से आंखी सी आ गई -



ये विष-फुंकार मुझ तक पहुंचेगी ही नहीं जागराज!

बादशाह और मन्त्रियों की आंखों में दिखाई पड़ी सर्वश्रेष्ठ चिन्ता ही चिन्ता -



जागराज! ये डौलाल हमें छोड़ेगा नहीं!



चिन्ता मत करो बादशाह!



आज ००००

०००० इसका पाला पड़ा है ००००



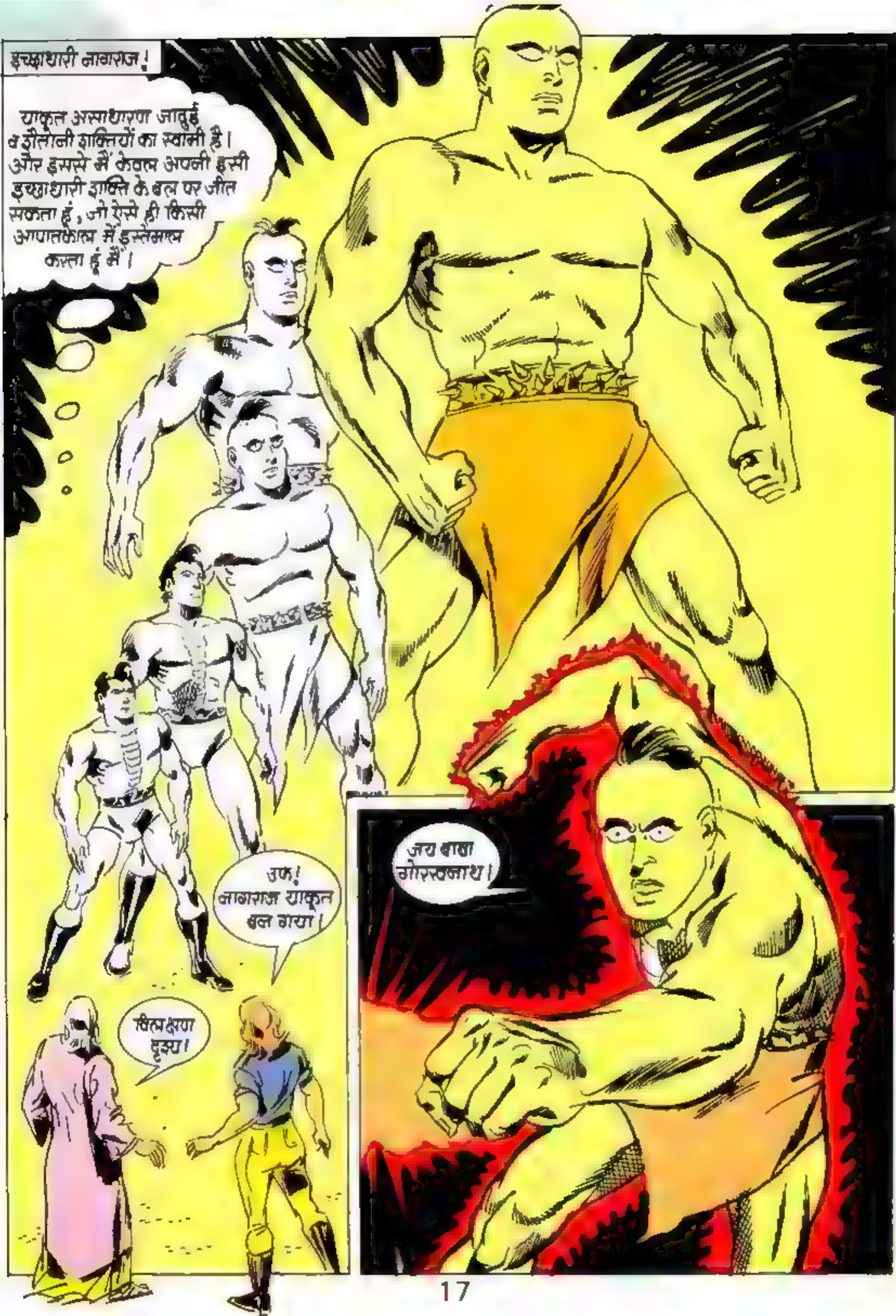
००० जागराज से।

जागराज अब अपनी कौन सी शक्ति का प्रयोग करने वाला है।



इच्छाधारी नागराज !

राकृत असाधारण जातु हैं  
व डींगली शक्तियों का स्वामी हैं।  
और इससे मैं केवल अपनी इसी  
इच्छाधारी शक्ति के बल पर जीत  
सकता हूँ, जो ऐसे ही किसी  
आपातकाल में इस्तेमाल  
करता हूँ मैं।



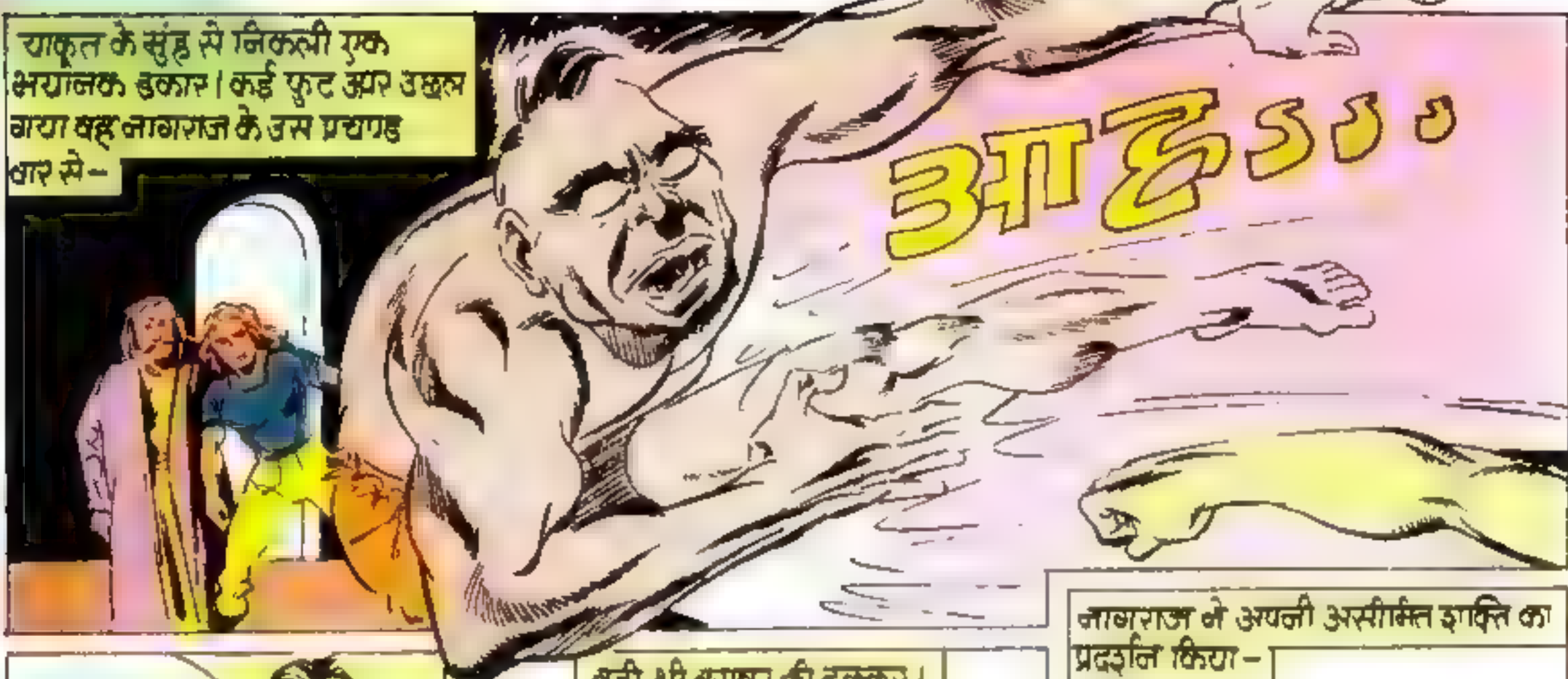
उफ!  
नागराज राकृत  
बल गरा।

वित्तक्षण  
हृश्य।

जय बाबा  
गोरखनाथ।

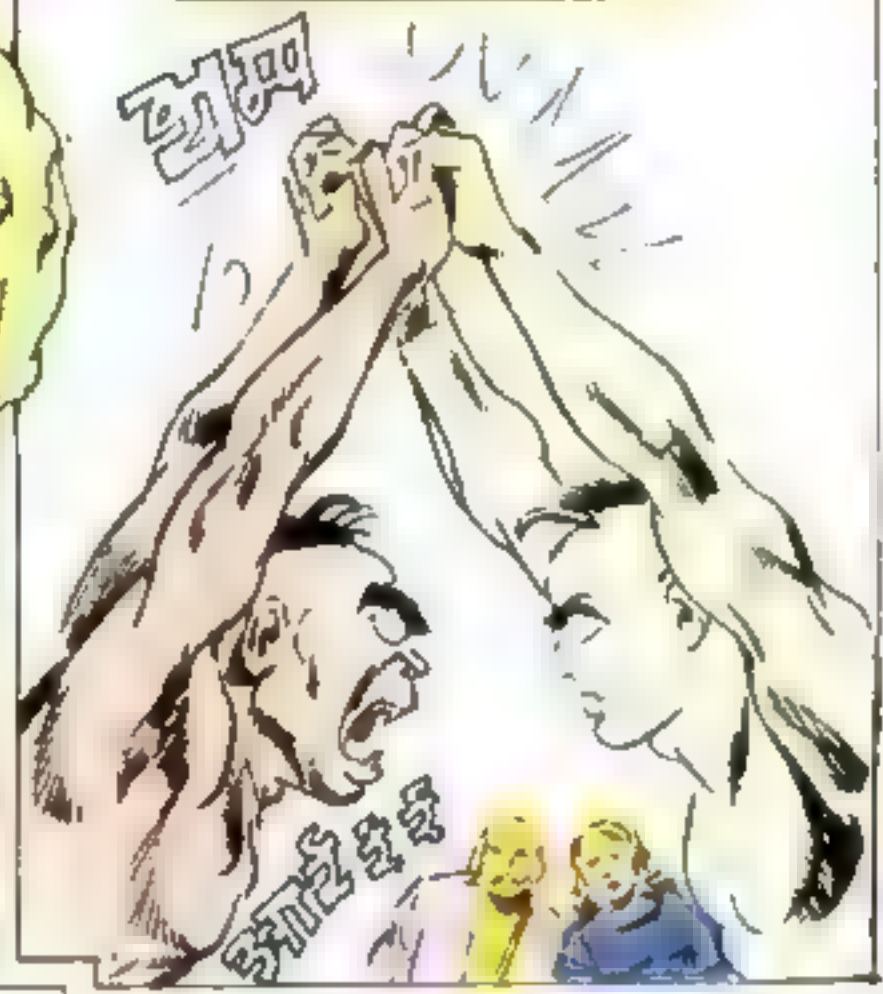


राकृत के सुंह से निकली एक  
अचानक डकार। कई फुट ऊपर उछल  
गया वह नागराज के उस प्रयोग  
घर से—



क्यों राकृत?  
अब बराबर की  
टक्कर में कौन  
जीतेगा?

वही ही बराबर की टक्कर।

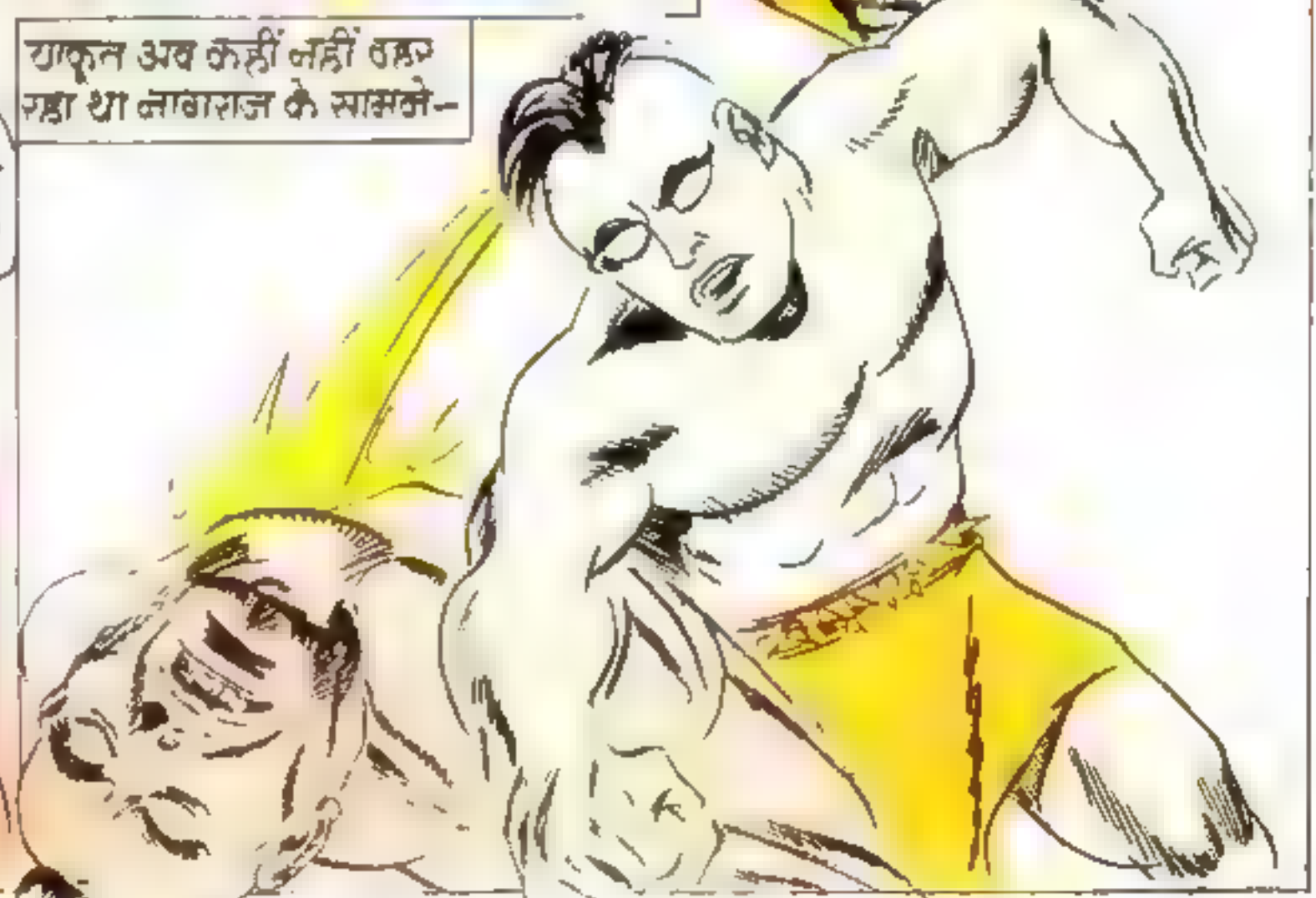


नागराज ने अपनी असीमित शक्ति का  
प्रदर्शन किया—



YOU'RE GREAT,  
NAGRAJ!  
इसे जीवित मत  
छोड़ना।

दुनिया का  
सर्वाधिक डाकिलोन्वी  
इन्सान है नागराज?

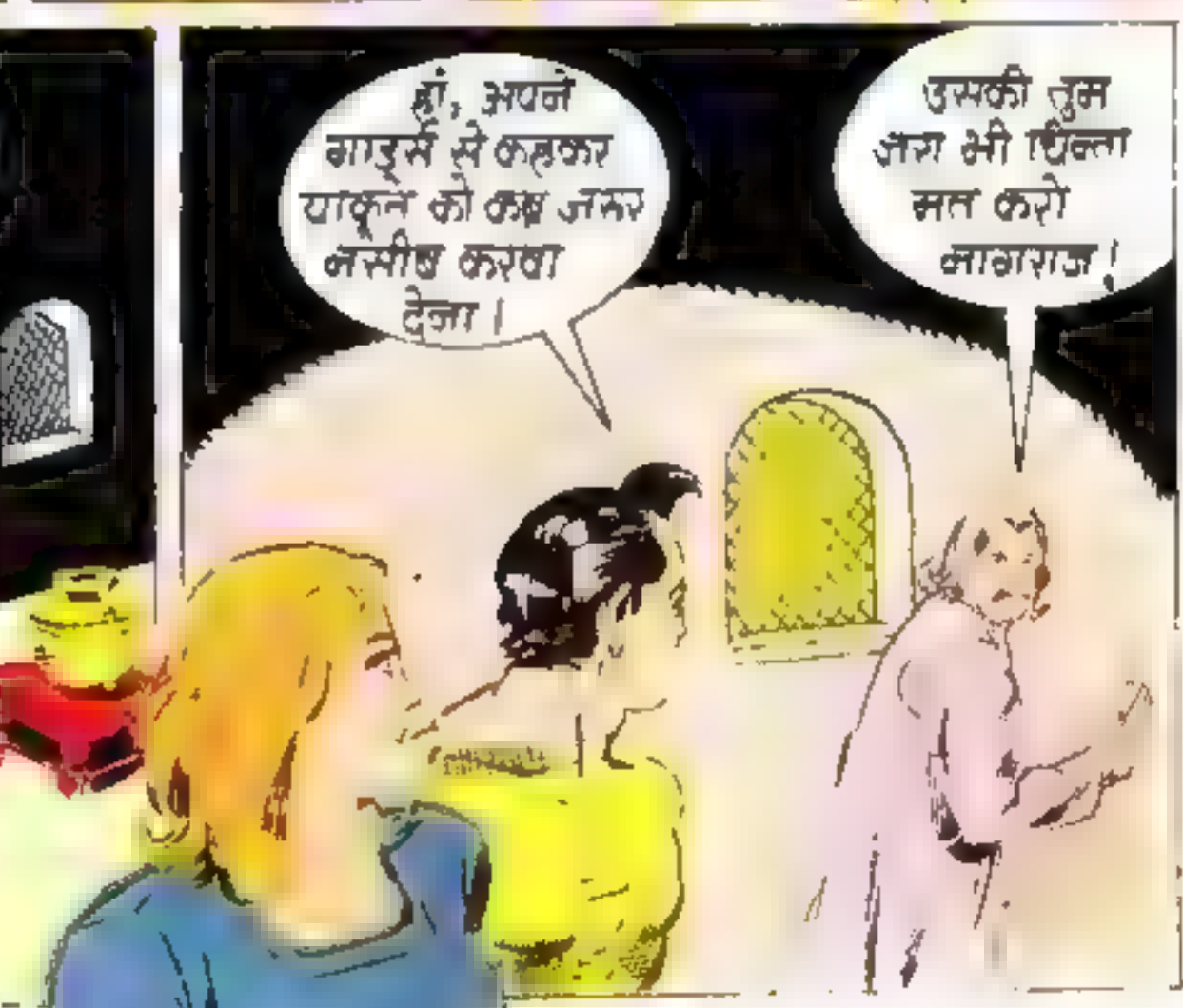


राकृत अब कहीं नहीं उतर  
रहा था नागराज के सामने—



घुटने के एक ही इतिहासी बार में दूट गई राकून की गर्दन—

मूसल प्रसन्नता से चीख पड़ी—





बुल्बारा की आंखों से ज्वालाबुस्ती फट पड़ा—

मारा गया। याकूत  
मारा गया।

नागराज! नागराज  
नागराज!

कल्प सीधियन  
कित्तर गुर्गार्ड और देवता  
के सजाने का आधा  
हिस्सा मिलेगा उसे, जो  
लायेगा नागराज की  
स्वोपड़ी।



देवता बकोरा!  
देवता बकोरा! नागराज की  
वश में करने की शक्ति दे।

बकोरा की आंखों से तीव्र चमक के  
साथ निकलता एक काला हीरा—



काला हीरा बुल्बारा की  
हथेली पर आ खिरा—

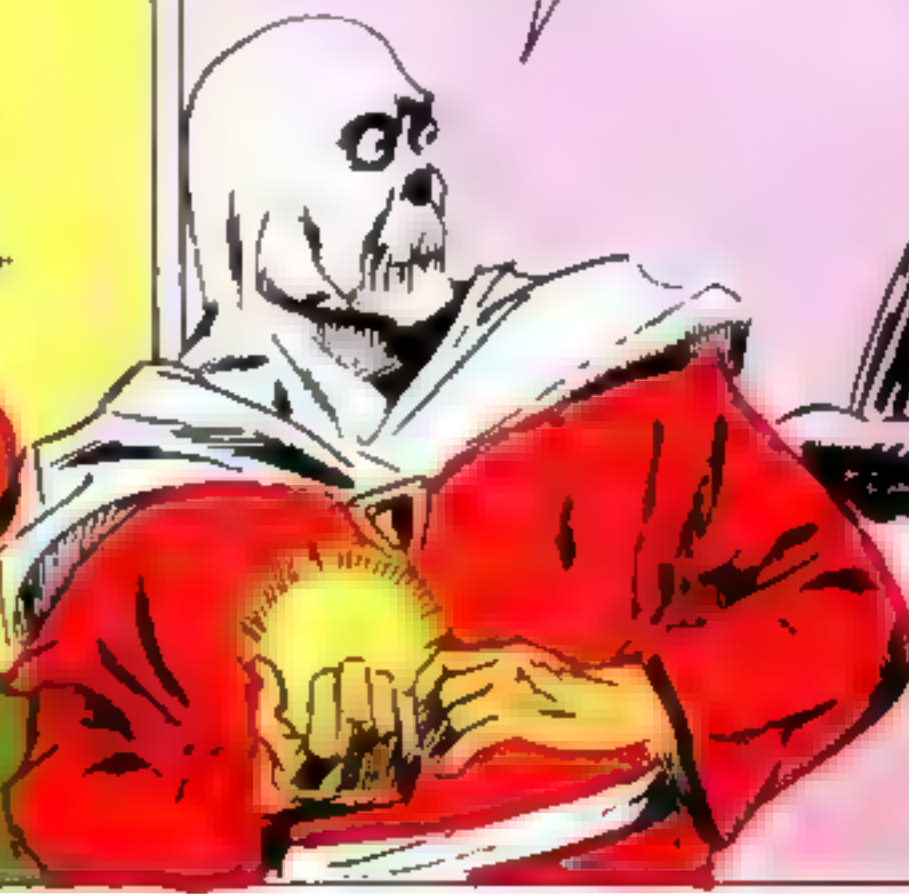
हा हा हा! अब  
नागराज की कक्ष में  
कैद करूंगा।



तभी चीक पड़ा बुल्बारा—

नागराज कक्ष में कैद  
होने के लिये तैयार है  
बुल्बारा!

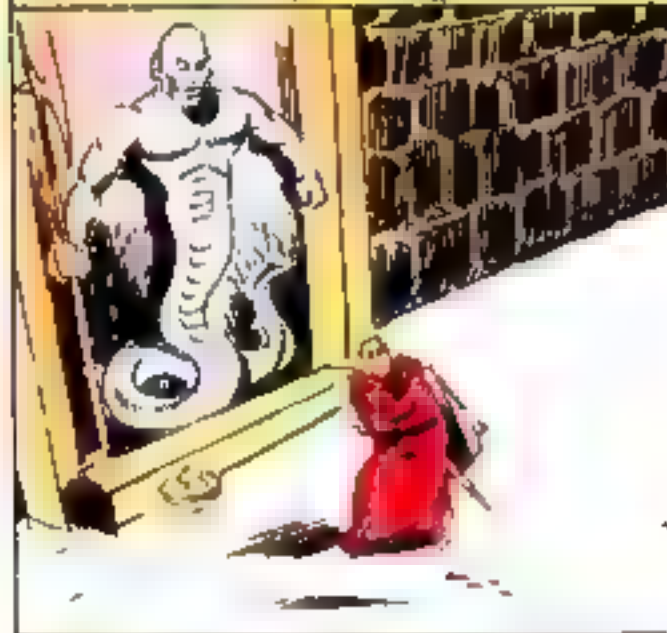
नागराज! यहाँ?





# बकोरा का जादू

सीधियों के चेहरों पर स्न नाच उठा—



जागराज! जिसकी सोपड़ी के बदले वस्त्र के जड़ों में मिलेगा सीधियों किस्मर गुच्छाई और देवता के स्वजाले की आधा हिस्सा।



धुल्लार! अब नून मेरे हाथों से नहीं बचोवो।

इसी पल कई सीधियों के इस्त्र हवा में सरसराए—



लेकिन जागराज वहां कहां था—



अब सिर्फ डौलान करेंगे आदमखोरीं।

डौलानों की पलटन में एक अकेला सिपाही लड़ रहा था जंग।



मकबरे में उतर आई सूसन भी अपने अंगरक्षकों के साथ—



जागराज में तुम्हारे साथ हूं।

सूसन!

प्रलय मचा दी सूसन ने—



आह!

आह!!



बुल्हार बारूज उठा—

ये, बकीरा के जादू! नागराज को वहां से कर!

नागराज फंस के रह गया उस काले जादू के जादू में—

बकीरा के जादू से बच न सका नागराज—



ठीक तभी—



सूअन के नीचे गिरते ही कई तलवारें उठ बाईं उस पर—

नहीं, हमें मारना नहीं।  
कल जल में हमें देवना  
बकीरा को बारी चढ़ाया  
जायेगा।



बुल्हार सक्कोहित हो चुके नागराज के निकट पहुंचा—

बावुराण।  
नागराज के सिये कल  
का हुजत जाल  
करो।  
हा हा  
हा।





## बकोरा का जादू

छेड़ोड़ा मूँसल को एक सक्करे में  
फेंक दिया गया —

ये इस अंधेरे कैदखाने  
से बाहर नहीं निकल  
पायेगी।



जागराज बुरी तरह सम्मोहित हो चुका था—

जल्दी करो बाबूरेब!  
जल्दी करो, मैं जल्दी मोत  
चाहता हूँ जागराज  
की।

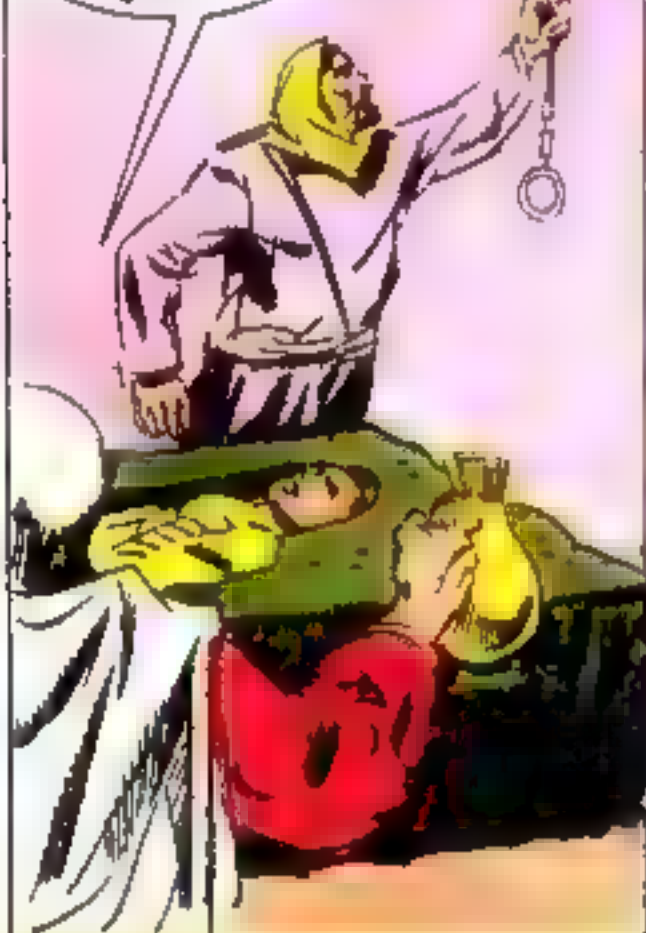


जागराज सब कुछ अपनी आँखों से देखते हुए भी विश्वास था—

इस सम्मोहन को तोड़ने के लिए  
मुझे अपनी बड़ीकरा शक्ति को  
रुकावित करना होगा।



बाबूरेब! सोल दो  
पाइप का मुँह। क्ला दो  
जागराज की मोल का  
पुल्ला।



जागराज भीषण मानसिक श्रम कर  
रहा था उस काले जादू को तोड़ने  
के लिए।

और कराह पड़ा जागराज—



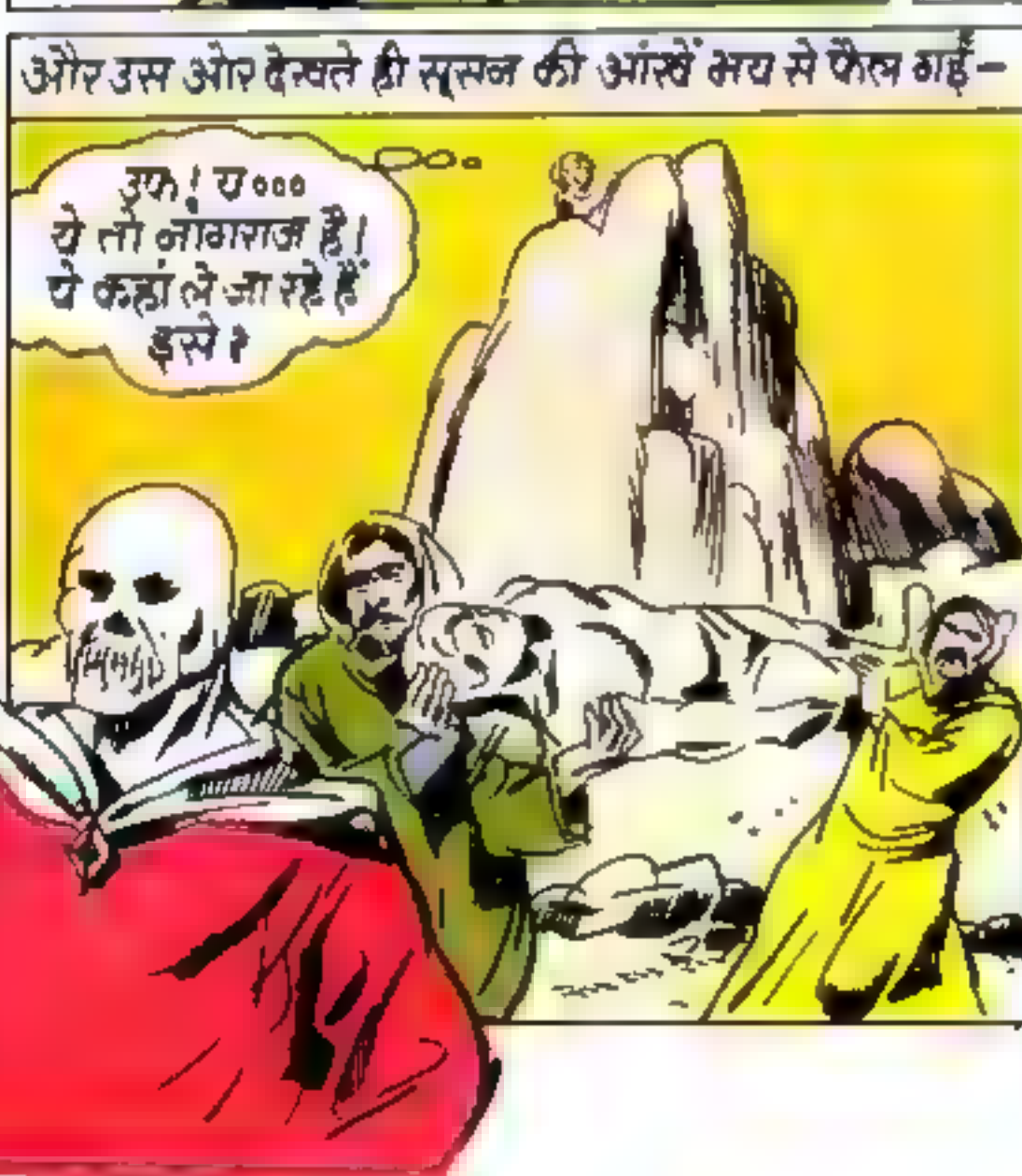
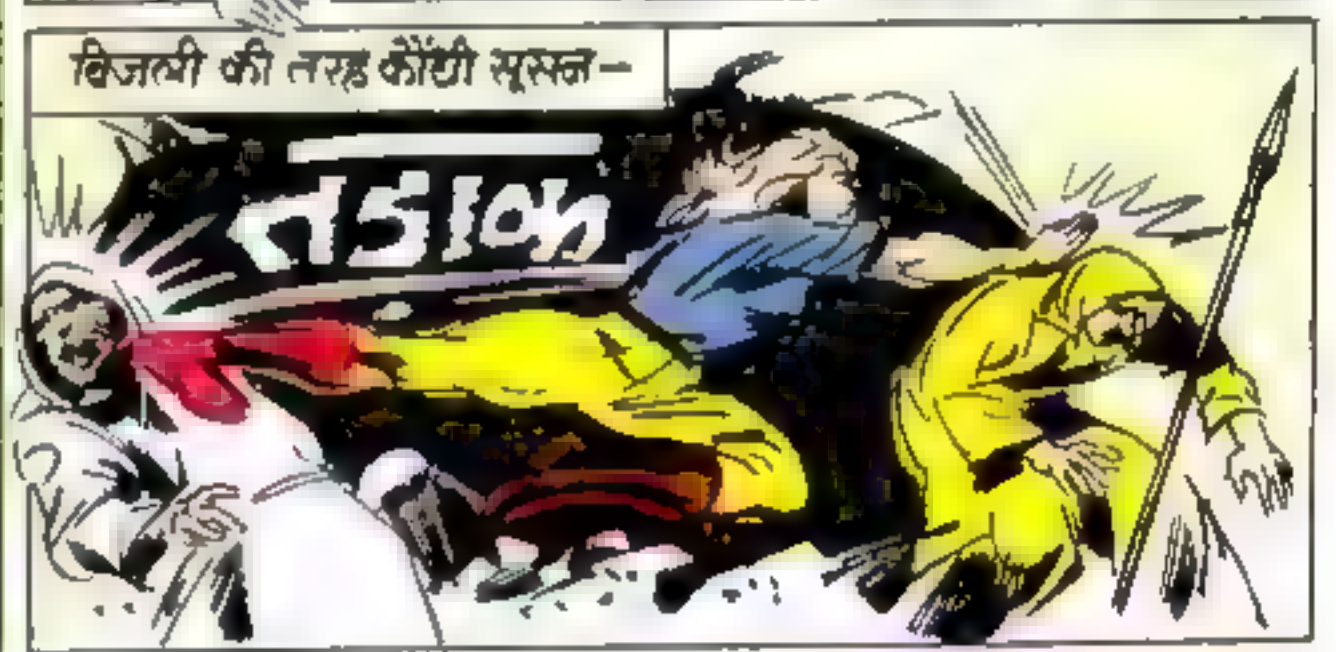
पिछला हुआ मोल  
जागराज के जिस्म पर अंगारों की  
तरह पड़ रहा था।

मोल के पुतले में बदल गया जागराज—

हा हा हा!  
मोल का  
जागराज!











जागराज को कब से दफना दिया डौतालों ने।

नहीं-नहीं।

जागराज को मरने नहीं देगी सूसन।



आज मनेगा जड़न। हा हा हा।



बहुत कुछ घट रहा था उस मकबरे में-

जड़न की तैयारी करो बाबूरोब।

प्राणियों की तरह बरसती चली गई सूसन जागराज की कब पर अपना सा चाकू।



तुम्हें मरने नहीं देगी सूसन। जागराज! तुम्हारा नहीं जागराज! कुछ ही देर में स्वतंत्र कर दूगी मैं तुम्हें।

उसकी करुण आवाज जागराज की कब को चीरे दे रही थी-



जागराज! मैं जानती हूँ मौत भी पास आने से डरती है तुम्हारे। तुम जीवित हो बाहर आओ।



तुम बाहर ना आए जागराज! तो सूसन भी खुद को मार डालेगी।

जागराज के लिए कितना प्यार भरा हुआ था सूसन के उस प्रयास में।

किन्तु चट्टानों का सीला चीरने में पूर्णतः असमर्थ था उसका चाकू।

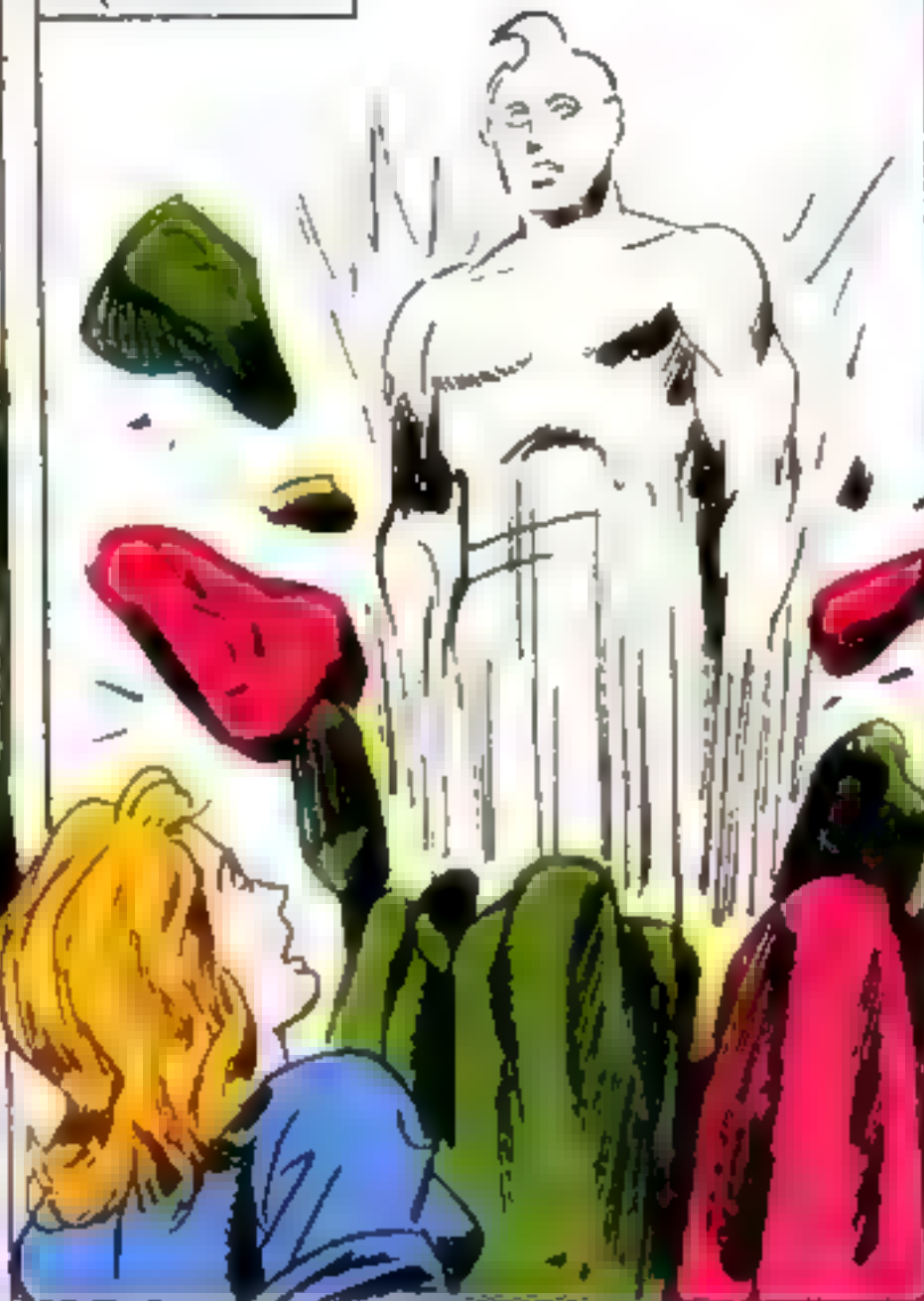
उठ गया हाथ सूसन का अपनी जिंदगी देने की।



तभी एक भीषण धमाका हुआ -



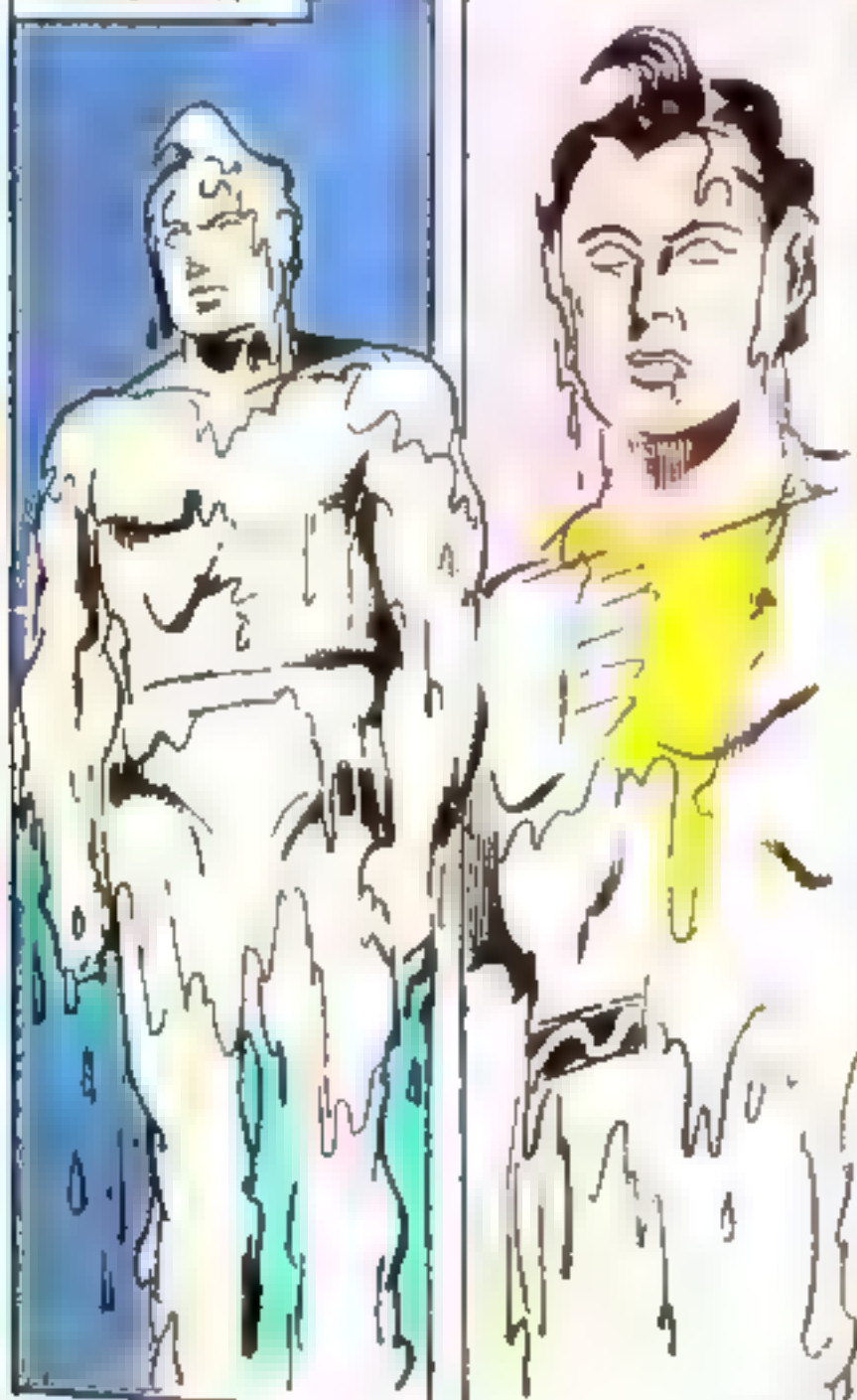
और मोम का पुतला चट्टान की कण जाड़ कर बाहर निकला -



हिराकी से खड़ी देखनी रह गई सूजन -



जागराज के भीषण सांसारिक श्रम के कारण उत्पन्न बर्फी चकर पिघलने लगी उस पर घड़ी मोम की परत -



कह उठा जागराज -



सूजन! आज तुम्हारे कारण मैं बजोरा के कार्रों जादू से मुक्ति पा सका। अगर तुम मुझे पुकारती न हो मैं न जाने कब तक बंधा रहता कार्रों जादू में। लेकिन तुम इनके पंजे से जीवित कैसे बच गई?

तब सूजन ने जो कुछ बताया उसे सुनकर जागराज की आँखें चमक उठीं।



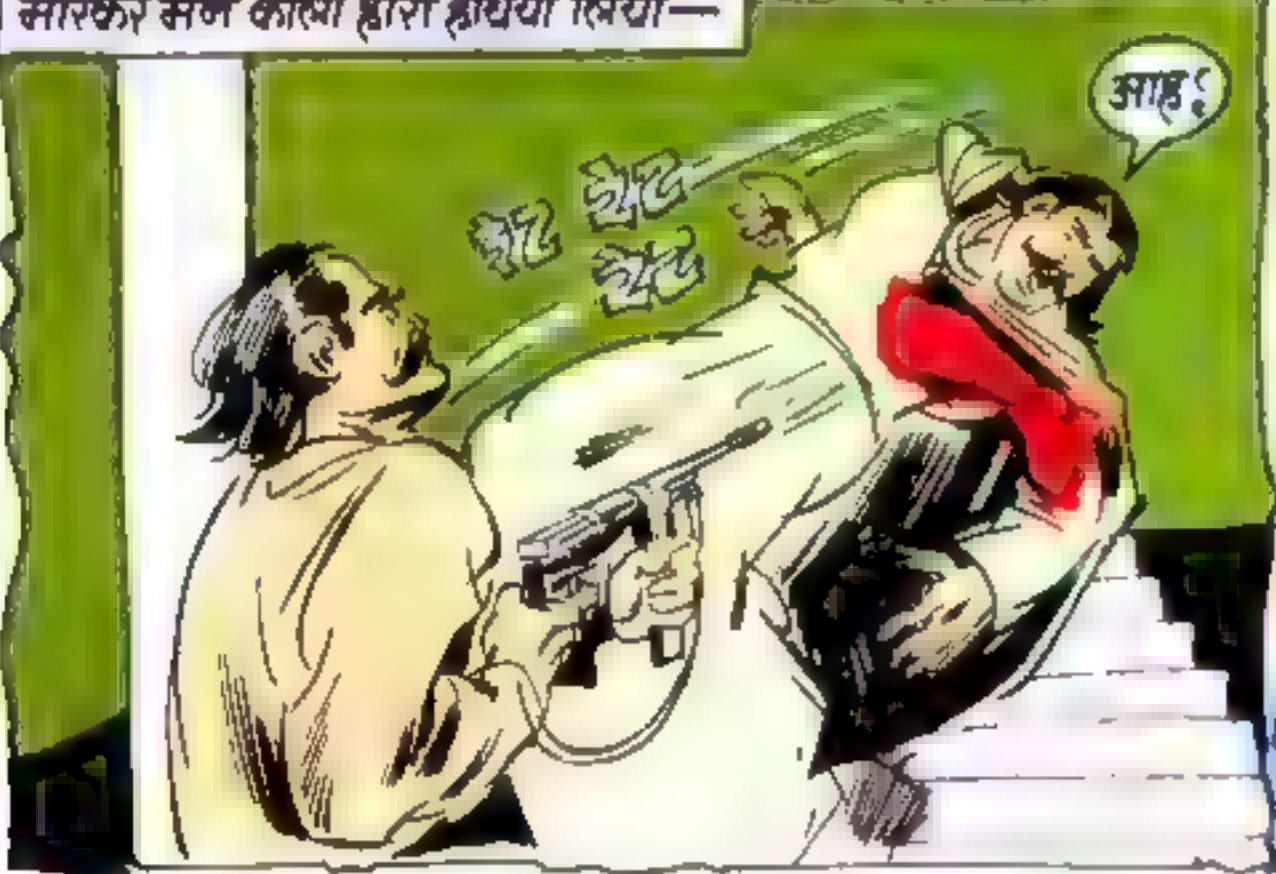




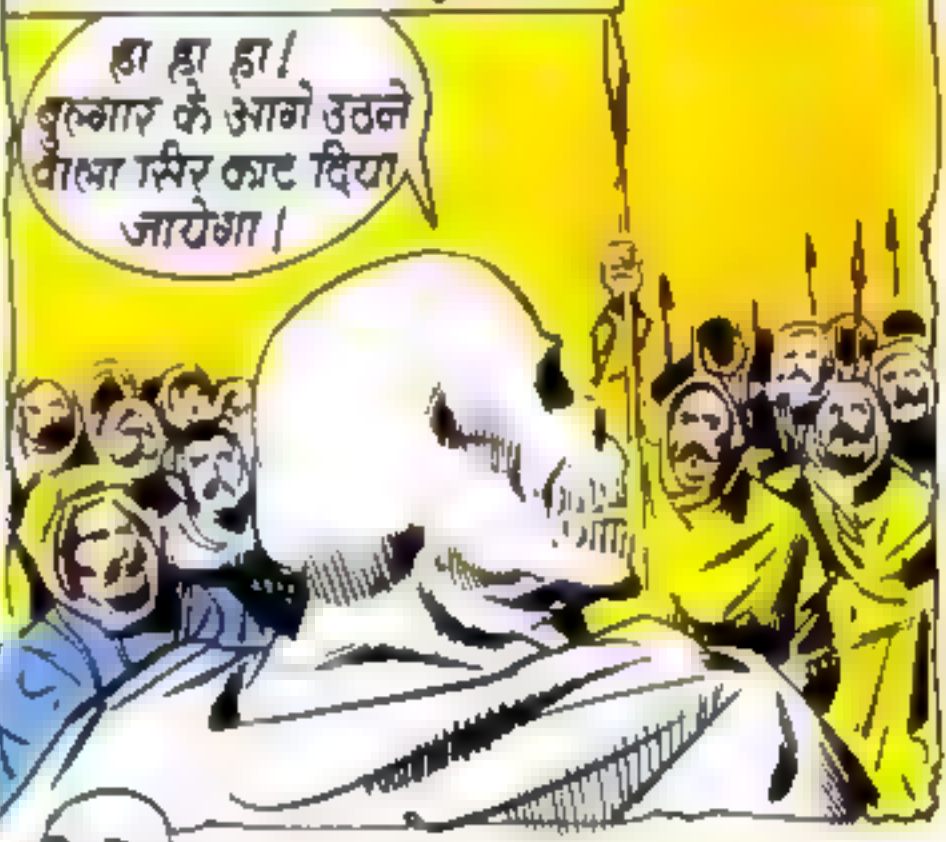




काले हीरे का धारक सीधियन राजा था बहुत बड़ा जादूगर, जिसे मारकर मैंने काला हीरा हाथिया लिया—



और मास्क चढ़ाकर काले जादू के बल पर वन बैठा मैं सीधियों का राजा बुल्गार—



सोने की लूटने की प्रेरणा भी मुझे सीधियों के इतिहास से मिली। मैंने उन सभी सीधियों को दोबारा लहू का प्यासा व सोने का लुटेरा बनाया।



और अब तुम्हें बकोरा के जादू से मार डालूंगा मैं नागराज!





बादशाह ने किया देवता बकोरा का आह्वान-

उसकी पुकार पर प्रकट हुए बकोरा देवता -

हे देवता बकोरा !  
प्रकट हो और दे मुझे अपना  
शक्ति रूप ।

बादशाह !  
मैं तुझ में समा रहा  
हूँ ।

बादशाह में समा गया बकोरा देवता -

अब तू  
नहीं बचेगा  
जागराज !

जागराज के जिस्म की जकड़ लिया  
बकोरा देवता की पूँछ ने -

जागराज का दम घुटने  
लगा उस पकड़ में -

तभी जागराज के शरीर में आया एक अचरदस्त परिवर्तन-

मैं इसका  
सुकावला केवल  
इच्छाधारी रूप में  
ही कर सकता  
हूँ ।

देवता की जकड़ ठाकई शक्तिशाली थी ।



उस शक्तिशाली इच्छाधारी रूप में वह बकोरा देवता से किसी कदर भी कमजोर न था।

अब देखता हूँ बादरखान कीज जीतेगा?



बाजी हाथ से जाती देख बादरखान ने लिकाच लिया कल्ला हीरा -

काले हीरे के जादू से तो न बच पायेगा तू!



और नागराज के कुछ जबर्जस्त प्रहारों ने बादरखान को मजबूर कर दिया उसे छोड़ने पर -



नागराज की सर्प सेजा का नायक नागराज की कल्लाई से बाहर निकला -



जाओ नागाजन्द! काला हीरा छीन लो!

बादरखान काले हीरे के जादू का हस्तैसाध न कर सका -

अरे! ये साँप मेरा हीरा...



हीरा हाथ में आते ही नागराज ने पुकारा बकोरा देवता को -

हे बकोरा देवता! छोड़ दो इस डीतल का जिस्म! क्योंकि अब मैं इसके जिस्म की दुर्गति करने वाला हूँ।



अबाले ही पल बकोरा देवता ने छोड़ दिया बादरखान का जिस्म -





नागराज ने भी त्याग दिया इच्छाधारी रूप -



सत्तन कर दो नागराज को!



हजारों की संख्या में नागराज की सर्पसेना के जांचाज सैनिक दूट पड़े सीधियों पर -



नागराज जा पहुंचा बादस्वान के सामने -

बादस्वान! आज तुम्हें बचाने कोई नहीं आयेगा!

नागराज! ये होता है। इसे जीवित मत छोड़ना नागराज!



बादस्वान फिर दूट पड़ा नागराज पर -

स्वर्ण-संकाट बनने का मेरा सपना तुने चूर-चूर कर दिया नागराज!



नागराज ने बादस्वान का बड़ा हुआ मुक्का धाम लिया -

बादस्वान! बुरे काम का बुरा नतीजा होता है!





नागराज ने दुकड़े-दुकड़े कर दिये बादशाह के जिस्म के -



चित्रकथा कैसी लगी ?  
इस विषय में जरूर लिखें:  
**संजय गुप्ता**  
१६०३, दरीबा कला,  
दिल्ली-६

...सोचें कि उसका यह सफर अलग था।

32 समाप्त

मुद्रक : जापान आर्ट प्रेस